# ''विभाजन की त्रासदी और मोहन राकेश''

*डॉ. प्रतिभा शुक्ला

**शोध सारांश**

स्वाधीनता आन्दोलन के भारत को एक साथ–दो परिणाम प्राप्त हुए। एक ओर भारत को जहाँ आजादी का अमृत मिला वहीं दूसरी ओर उसे विभाजन की विभीषिका का सामना भी करना पड़ा। भारत विभाजन निःसन्देह, इतिहास की एक बहुत बड़ी त्रासदी है, जिसने समाज, इतिहास, राजनीति, संस्कृति लोक–जीवन और साहित्य आदि सभी को व्यापक रूप से प्रभावित और परिवर्तित कर दिया। यह वह घटना है जिसे सुलझाना, समझना और अभिव्यक्त करना आसान नहीं है। भारतीय भाषाओं के अनेक रचनाकारों ने अपने–अपने ढंग से इसे अनुभूत करके अभिव्यक्ति दी है।

मशहूर पाकिस्तानी इतिहासकार आयशा जलाल का मानना है "विभाजन" "बीसवीं सदी के दक्षिण एशिया की केन्द्रीय ऐतिहासिक घटना थी" एक ऐसा ऐतिहासिक क्षण था जिसनें आने वाले अनेक दशकों को परिभाषित कर डाला। मानव इतिहास में कभी भी इतनी भारी संख्या में जनसंख्या का पलायन नहीं हुआ था, जितना विभाजन के कारण बने पाकिस्तान और भारत के बीच हुआ था। यह सत्य है कि साहित्य समाज का दर्पण होता है। इसलिए साहित्य अपने इतिहास और वर्तमान दोनों से प्रभावित होता है। यही कारण है कि देश विभाजन की त्रासदी के विविध पक्षों का हिन्दी कथाकारों ने अपनी कहानियों में इसे प्रभावी और मार्मिक अभिव्यक्ति दी है। हमारे अनेक कथाकारों ने इस संकट का स्वयं सामना भी किया है और इसे संवेदनात्मक स्तर पर भोगा भी है। आजादी के बहत्तर वर्षो बाद भी कई रचनाकार सम्प्रति भी इस घटना को अपनी रचनाओं में केन्द्रीय विषय बना रहें है। इस सदी में कमलेश्वर रचित 'कितने पाकिस्तान' और अभी हाल में कृष्णा सोबती रचित 'गुजरात पाकिस्तान से गुजरात हिन्दूस्तान' उपन्यास इसका प्रमाण है। इन रचनाकारों के अतिरिक्त अज्ञेय, विष्णु प्रभाकर, चन्द्रगुप्त विद्यालंकार, पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' चतुरसेन शास्त्री, उपेन्द्रनाथ 'अश्क', कमलेश्वर, भीष्म साहनी, कृष्णा सोबती, राजी सेठ, महीप सिंह आदि की कहानियों में विभाजन के विविध पक्षों का चित्रण किया गया है। विभाजन की इस घटना ने व्यक्ति को बाहर और भीतर दोनों तरह से शरणार्थी बना दिया था।

आधुनिक कहानीकार मोहन राकेश रचित "मलबे का मालिक", "परमात्मा का कुत्ता", क्लेम, कटी हुई पतंग और कंबल शीर्षक कहानियों विभाजन की त्रासद परिस्थितियों का अत्यन्त मार्मिक चित्रण करती है। मोहन राकेश की कहानी "मलबे का मालिक" सांस्कृतिक सहिष्णुता, मानवीय करूणा और ऐतिहासिक व्यर्थता का बोध कराती है। विभाजन के लगभग डेढ़ दशक (15 वर्षो) बाद पाकिस्तान का दल अमृतसर में हॉकी का मैच देखने आया है। इस दल का एक सदस्य गनी मियाँ अपने मकान के मलबे को पहचान लेता है। उसे बडी तसल्ली होती है कि उसे पहलवान रखा गनी जैसा जान–पहचान वाला मिल गया है। "मेरे लिए चिराग नहीं है तुम लोग तो हो" गनी मियाँ का सहज

विश्वास मानवीय करूणा को मजबूत बनाता है।[1] परमात्मा का कुत्ता कहानी में वृद्ध शरणार्थी परेशान होने के बाद खिसियाहट में आकर अपनी तरह से संघर्ष करता है। यह रचना विभाजन के पश्चात भारत में पनपते भ्रष्टाचार व सरकारी अफसरों के अमानवीय व्यवहार का चित्रण करती है। इसमें निष्क्रियता, घूसखोरी, अन्याय से लड़ते आम आदमी का व्यंग्यात्मक चित्रण है। कई स्थानों पर यह कहानी सआदत हसन मंटो की अमर कहानी ''टोबा टेकसिंह'' का स्मरण करवा देती है। इस कहानी में एक बूढ़ा सरदार अपने भाई की विधवा पत्नी, जवान बेटी और छोटे बेटे के साथ कमिश्नर साहब के आगे धरना देता है ताकि उसे जो सौ परला बंजर, गड्ढ़ों वाली जमीन मिली है, उसके बदले खेती योग्य जमीन मिल जाए। जमीन की फाइल जिसका नम्बर "बारह सौ छब्बीस बटा सात" है अब वही उसकी पहचान है। भूखों मरने की अपेक्षा सत्याग्रह करने के उद्देश्य से वह बूढ़ा सरदार सरकारी कर्मचारियों को जली–कटी सुनाता हुआ कहता है– 'तुम सब भी कुत्ते हो, और मै भी कुत्ता हूँ।" फर्क इतना है कि तुम लोग सरकार के कुत्ते हो और हम लोगों की हड्डियाँ चूसते हो, सरकार की तरफ से भौंकते हो। मैं परमत्मा का कुत्ता हूँ, उसकी दी हुई हवा को खाकर जीता हूँ, और उसकी तरफ से भौंकता हूँ। उसका घर एक इंसाफ का घर है। मेरा तुम से असली बैर है।"[2] भूख और अन्यास ने उसे ऐसी अमानवीय स्थिति तक पहुँचा दिया है कि वह सार्वजनिक रूप से गालियाँ बोलता है, नंगा होकर कमिश्नर के कमरे में घुस जाना चाहता है। मिन्नतें वह कर चुका, घूस देने के लिए उसके पास पैसा है नहीं, इसीलिए वह सबके सामने नंगा होकर विरोध प्रकट करता है। एक मनुष्य द्वारा दूसरे मनुष्य की मजबूरी का लाभ उठाने की स्वार्थी प्रवृत्ति का इस कहानी में जीवन्त वर्णन है। क्लेम कहानी में लेखक ने उन पात्रों की मनोदशा पर प्रकाश डाला है। जिनकी जमीन जायदाद पाकिस्तान में छूट गयी है व उसके बदले में क्लेम की आशा में भाग दौड कर रहे है। यह कहानी शरणार्थियों को दी जाने वाली सरकारी सहायता व उसके खोखलेपन को प्रस्तुत करती है। यहाँ भी झूठ व सच का संघर्ष है तो दूसरी ओर विभाजन से टूटे मनों के बिखरने का भी चित्रण है। जिसका कोई क्लेम नहीं मिल सकता है। ताँगाचालक साधुसिंह के ताँगे में बैठी तीन सवारियाँ क्लेम दफ्तर जाते हुए दफ्तर वालों की कार्यप्रणाली की आलोचना कर रहे है। ताँगाचालक साधुसिंह सहित क्लेम प्राप्त करने वालों की मानसिकता का स्तर भी चार तरह का है। पहली वृद्ध महिला है जिसे शिकायत है कि उसे जो क्लेम मिला है, वह कम है। दूसरा वह अधेड़ व्यक्ति है जिसे क्लेम में अभी तक कुछ भी नहीं मिला है, ना ही उसके पास आजीविका का ही कोई साधन है। तीसरा बूढ़ा सन्तुष्ट सरदार है जिसने बढ़ा–चढ़ा कर क्लेम किया परिणाम स्वरूप उसे साठ हजार की अच्छी खासी रकम मिल गई है। चौथा स्वयं साधुसिंह है, जिसकी पत्नी दंगों में मारी गई। पीछे वह छोड आया एक किराये का मकान तथा अपने हाथों से लगाया गया एक आम का पेड़। वह सोचता है कि किसका क्लेम करूँ, पत्नी का, .मकान का, पेड का, जिसे वह पीछे छोड़ आया है।[3] जड़ से कटा वृक्ष, अपने घर–जमीन से अलग इंसान, आसमान से गिरी बूँदें, धरती में समाया बीज, जैसे अपने वास्तविक रूप में नहीं आते वैसे ही विभाजन की यंत्रणा और त्रासदी का सामना करने वाली आबादी कभी भी अपने उस स्वरूप को नही पा सकी, जैसे कि वह विभाजन के पूर्व थी, इस विभाजन ने समाज, संस्कृति, संस्कारों को ही परिवर्तित नहीं किया वरन् इतिहास को भी बदल दिया। इस मानव निर्मित विपत्ति से मानवता पर क्या गुजरी? मानवीय सम्बन्धों का चेहरा कैसे विकृत हुआ? इसके प्रामाणिक चित्र भारत के विभाजन को पृष्ठभूमि बनाकर लिखी गई कहानियों में साक्षात है। यह कहानियाँ उस आग के दरिया से पार उतर आने वालों के पीछे दिलों के छालों और घावों को भी दिखाती है। "कम्बल" कहानी विस्थापित शरणार्थी शिविर की कहानी है जिसमें वृद्ध रामसरन का परिवार है। परिवार में पत्नी के साथ युवा पुत्री व एक छोटा पुत्र है। खैरात में मिला कम्बल केवल युवा पुत्री को मिलता है जो अभाव में भी शोषण की ट्रेजड़ी को व्यक्त करता है निर्धनता और स्वार्थपरता के बिन्दु पर यह कहानी प्रेमचंद की कफन से साम्य रखती है। शरणार्थी कैम्प में मानवीय सम्बन्धों में उभरती विकृतियों का विश्लेषण करने वाली संभवतः मोहन राकेश की एकमात्र कहानी है जिसमें अभावों की ज्वाला में जलते मानवीय संबंधों का ह्रदय–विदारक चित्र अंकित है। रात को पुण्य बटोरने वाले कुछ लोग कम्बल बाँटने आते हैं। सोई हुई युवतियों के अंग मसलते हुए वे उन्हे

कम्बल दान करने का पुण्य अर्जित करते है, परन्तु जिन्दा रहने की लालसा, ठंड से बचने की मजबूरी युवतियों का मुँह बंद रखती है। अभाव मनुष्य को कितना गिरा देते हैं, अमानवीय बना देते हैं, इसका चित्रण कंबल को रातभर ओढ़ने के प्रसंग को लेकर हुआ है। ठंड से अकड़े बेजान, वृद्ध रामसरन के शरीर को हिलाकर गंगार्दई पुनः जगाना चाहती है।[4] विस्थापितों के जीवन पर लिखी हुई कहानियों में यह कहानी बहुत मर्मस्पर्शी सूक्ष्म और संवेदनापूर्ण है।

''कटी हुई पतंग'' कहानी भी विभाजन की पृष्ठभूमि पर लिखी कहानी है। लाहौर के कृष्णनगर मुहल्ले में रहने वाली लाजवंती की बेटी राजकरनी से अचानक दिल्ली के गाँधी गेट के नीचे रवि की मुलाकात होती है। लाहौर की शर्मीली, संकोची, भोली–भाली एवं घरेलू लड़की राजकरनी विभाजन की त्रासदी से गुजरकर एकदम बदल जाती है। एक अधेड़ महिला जब उसे बुरा–भला कहती–कहती उसकी माँ को गालियाँ देने लगती है तो राजकरनी क्रोध में लाल होकर कहती है– ''माँ को गाली मत दे री!, नही तो यहीं पर भुरता कर डालूँगी।''[5] ''कटी हुई पतंग'' उन शरणार्थियों की वेदना व्यक्त करती है जिसने भोली–भाली राजकरनी को एकदम बदल कर रख दिया है। लेखक ने ''कटी हुई पतंग को बच्चों द्वारा लूटने और फाड़ दिए जाने की घटना को सांकेतिक तौर पर युवती राजकरनी से जोड़ दिया है जिसे भीड़ में लोग उसी लूट भरी दृष्टि से देख रहे हैं। ''परिवेश का दबाव किस प्रकार मनुष्य की मानसिकता का परिवर्तित कर देता है, जिसे रवि और राजकरीन के परिवर्तित व्यवहार से देखा जा सकता है।

श्री रामदरश मिश्र के शब्दों में मोहन राकेश की ये सभी कहानियाँ ''ऐसे व्यक्तियों की कहानियाँ है जो परिवेश के दबाव से उत्पन्न कड़वाहट को देखते हुए भी परिवेश से जुडे रहने की सार्थकता अनुभव करते है जो परिवेश का निरर्थकताओं से आहत होकर भी उसकी सार्थकता की खोज में रहा है। इस प्रकार भारत के विभाजन के कारण उत्पन अनेक समस्याओं, उलझनों और आपसी सम्बन्धों में आये परिवर्तन को मोहन राकेश ने अपनी कहानियों में वर्णित किया है।[6]

***व्याख्याता**
**हिन्दी विभाग**
**राजकीय महाविद्यालय, किशनगढ़**
**अजमेर (राज.)**

**संदर्भ सूची**

(मोहन राकेश की सम्पूर्ण कहानियाँ–संस्करण)

1. मलवे का मालिक – पृष्ठ 230
2. परमात्मा का कुत्ता – पृष्ठ 324
3. क्लेम – पृष्ठ 112
4. कम्बल – पृष्ठ 334
5. कटी हुई पतंग – पृष्ठ 459
6. आधुनिक हिन्दी कहानियाँ रामदरश मिश्र